क़ुरआन व हदीस की रौशनी में शफ़ाअत ए मुस्तफ़ा ﷺ
के सबूत पर इन्तिहाई मुख़्तसर व जामेअ तहरीर

इस्माउल अरबईन फ़ी शफ़ाअति सय्यदिल महबूबीन

मुसन्निफ़

आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अहमद रज़ा खां
علیہ الرحمۃ و الرضوان

पेशकश:- इल्म की रौशनी

चालीस अहादीसे शफ़ाअत

بسم الله الرحمن الرحيم

सवाल:- क्या फ़रमाते है उलमा ए दीन इस मसअले में कि नबी "ﷺ" का शफ़ीअ (शफ़ाअत करने वाला) होना किस हदीस से साबित है।

بسم الله الرحمن الرحيم

अलजवाब

सुब्हानअल्लाह ऐसे सवाल सुनकर कितना तअज्जुब आता है कि मुसलमान व मुद्दइयाने सुन्नत और ऐसे वाज़ेह अक़ाइद में तशकीक की आफ़त (यानी तअज्जुब है कि इतने साफ अक़ाइद के मसअले में वह लोग शक करते हैं जो सुन्नी और मुसलमान हैं) यह भी क़यामत के क़रीब आने की अलामत है।

انا لله وانا اليه راجعون

अहादीसे शफ़ाअत भी ऐसी चीज़ हैं जो किसी तरह छुप सकें?

बीसयों सहाबा सदहा (सैकड़ों) ताबेईन हज़ारहा मुहद्दिसीन उनके रावी, हदीस की तमाम किताबें सिहाह, सुनन, मसानीद, मआज़िम, जवामेअ इनसे मालामाल हैं।

अहले सुन्नत का हर मुतान्फ़िफ्फस (हर शख़्स यानी एक आम आदमी भी) यहाँ तक कि औरतें बच्चे बल्कि दहक़ानी (देहाती) जुह्हाल

(जाहिल लोग) भी इस अक़ीदे से आगाह — ख़ुदा का दीदार मुहम्मद "ﷺ" की शफ़ाअत एक एक बच्चे की ज़बान पर जारी।

फ़क़ीर ग़फ़रल्लाहु तआला लहू ने रिसाला "समऊँ व ताअह लि अहादीसिश्शफ़ाअह" में बहुत कसरत से इन अहादीस की जमा व तलख़ीस की है यहां संक्षेप में सिर्फ़ चालीस हदीसों की तरफ इशारे और उनसे पहले चंद आयाते क़ुरआनिया की तिलावत करता हूँ।

अल्लाह तआला फ़रमाता है:-

आयात न. 1:-

عَسٰۤی اَنۡ یَّبۡعَثَکَ رَبُّکَ مَقَامًا مَّحۡمُوۡدًا

तर्जमा:- क़रीब है कि तेरा रब तुझे मक़ामे महमूद में भेजे।

सही बुख़ारी शरीफ में है कि हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्नेबीन (मुज़्नेबीन यानी गुनहगार - - - शफ़ीउल मुज़्नेबीन यानी गुनहगारों की शफ़ाअत करने वाले) "ﷺ" से अर्ज़ की गई मक़ामे महमूद क्या चीज़ है? फरमाया वह शफ़ाअत है ।

अल्लाह तआ़ला फरमाता है :-

आयत न. 2 :-

وَلَسَوۡفَ یُعۡطِیۡکَ رَبُّکَ فَتَرۡضٰی

तर्जमा:- और करीब तर है तुझे तेरा रब इतना देगा कि तू राज़ी हो जाएगा।

दैलमी मुस्नदुल फ़िरदौस में अमीरुल मोमिनीन मौला अली कर्र-मल्लाहु वजह्हुल करीम से रावी जब यह आयत उतरी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्नेबीन "ﷺ" ने फ़रमाया जब अल्लाह तआ़ला मुझसे राज़ी करने का वादा फ़रमाता है तो मैं राज़ी न होऊँगा अगर मेरा एक उम्मती भी दोज़ख में रहा।

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهٖ وَسَلَّمَ

तबरानी औसत बज़्ज़ार मुसनद में मौलल मुस्लिमीन رضي الله عنه से रावी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्नेबीन "ﷺ" फ़रमाते हैं:-

أَشْفَعُ لِيْ أُمَّتِيْ حَتّٰى يُنَادِيَنِيْ رَبِّيْ قَدْ رَضِيْتُ يَا مُحَمَّدُ؟

فَأَقُوْلُ: أَيْ رَبِّ قَدْ رَضِيْتُ

तर्जमा:- मैं अपनी उम्मत की शफ़ाअत करुँगा यहां तक कि मेरा रब पुकारेगा ऐ मुहम्मद तू राज़ी हुआ? मैं अर्ज़ करुँगा ऐ रब मेरे मैं राज़ी हुआ।

अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :-

आयत न. 3:-

وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ

तर्जमा:- और ऐ महबूब अपने ख़ासों और आम मुसलमान मर्दों और औरतों के गुनाहों की माफ़ी मांगो।

इस आयत में अल्लाह तआ़ला अपने ह़बीबे अकरम "ﷺ" को हुक्म देता है कि मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों के गुनाह मुझसे बख़्शवाओ और शफ़ाअत काहे का नाम है?

अल्लाह तआ़ला फरमाता है :-

आयत न. 4:-

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا

तर्जमा:- और अगर वह जब अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तेरे पास हाज़िर हों फिर ख़ुदा से इस्तिग़फ़ार करें और रसूल उनकी बख़्शिश मांगे तो बेशक अल्लाह तआ़ला को तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं।

इस आयत में मूसलमानों को इरशाद फरमाता है कि गुनाह हो जाए तो इस नबी की सरकार में हाज़िर हो और उससे शफ़ाअत की दरख़्वास्त करो, महबूब तुम्हारी शफ़ाअत फरमाएगा तो हम यक़ीनन तुम्हारे गुनाह बख़्श देंगे।

अल्लाह तआ़ला फरमाता है:-

आयत न. 5:-

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ۔

तर्जमा:- जब इन मुनाफ़िकों से कहा जाए आओ रसूलुल्लाह तुम्हारी मग़फ़िरत मांगेंगे तो अपने सर फेर लेते हैं।

इस आयत में मुनाफ़िकों की बदतर हालत इरशाद हुई है कि वह हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्नेबीन "ﷺ" से शफ़ाअत नहीं चाहते और जो आज नहीं चाहते वह कल न पाएंगे और जो कल न पियेंगे वह कल (चैन) न पाएंगे (यानी अज़ाब में रहेंगे)

हश्र में हम भी सैर देखेंगे

मुन्किर आज उनसे इल्तिजा न करे

अलअहादीस

शफ़ाअते कुबरा की हदीसें जिनमें साफ़ सरीह इरशाद हुआ कि महशर का दिन बहुत तवील (लम्बा) दिन होगा कि काटे न कटेगा और सरों पर आफ़ताब और दोज़ख़ नज़दीक उस दिन सूरज में दस बरस कामिल की गर्मी जमा करेंगे और सरों से कुछ ही फ़ासले पर लाकर रखेंगे प्यास की वह शिद्दत कि ख़ुदा न दिखाए गर्मी वह क़यामत की कि अल्लाह बचाए बांसों पसीना ज़मीन में जज़्ब होकर ऊपर चढ़ेगा

यहां तक कि गले गले से भी ऊँचा होगा जहाज़ छोड़ें तो बहने लगें लोग उसमें गोते खायेंगे लोग इन अज़ीम आफ़तों में जान से तंग आकर शफ़ीअ (शफ़ाअत या सिफ़ारिश करने वाला) की तलाश में जा-ब-जा फिरेंगे आदम (यानी आदम عَلَيْهِ ٱلسَّلَامُ) व नूह व ख़लील (यानी हज़रते इब्राहिम عَلَيْهِ ٱلسَّلَامُ) व कलीम (यानी मूसा عَلَيْهِ ٱلسَّلَامُ) व मसीह (यानी हज़रते ईसा عَلَيْهِ ٱلسَّلَامُ) के पास हाज़िर होकर जवाब साफ़ सुनेंगे।

सब अम्बिया (नबी की जमा) फ़रमायेंगे हमारा यह मर्तबा नहीं हम इस लाएक़ नहीं हमसे यह काम न निकलेगा नफ़्सी नफ़्सी तुम और किसी के पास जाओ यहां तक की सब के बाद हुज़ूर पुर नूर ख़ातनुन्नबिइयीन (जिन पर नुबुव्वत ख़त्म हुई) सय्येदुल अव्वलीन व आख़रीन (शुरु वाले और आख़िर वाले सब ही के सरदार) शफ़ीउल मुज़निबीन रहमतुल्लिल आलमीन (तमाम आलम के लिए रहमत) "ﷺ" की ख़िदमत में हाज़िर होंगे हुज़ूरे अक़दस "ﷺ اَنَا لَهَا اَنَا لَهَا" फरमायेंगे यानी मैं हुँ शफ़ाअत के लिए, मैं हुँ शफ़ाअत के लिए फिर अपने रब्बे करीम ﷻ की बारगाह में हाज़िर होकर सजदा करेंगे उनका रब तबारक व तआ़ला इरशाद फरमाएगा :-

يَا مُحَمَّدُ! اِرْفَعْ رَأْسَكَ وَقُلْ تُسْمَعْ وَسَلْ تُعْطَهْ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ

"ऐ मुहम्मद अपना सर उठाओ और अर्ज़ करो तुम्हारी सुनी जाएगी और मांगो कि तुम्हें अता होगा और शफ़ाअत करो कि तुम्हारी शफ़ाअत क़बूल होगा।

यही मक़ामे महमूद होगा जहाँ तमाम अव्वलीन व आख़रीन में हुज़ूर की तारीफ़ व ह़म्द व सना का गुल पड़ेगा और मुवाफ़िक़ व मुख़ालिफ़ सब पर खुल जाएगा बारगाहे इलाही में जो वजाहत (इज्ज़त, दबदबा) हमारे आक़ा की है किसी की नहीं और मालिके अ़ज़ीम ﷻ के यहाँ जो अज़मत हमारे मौला के लिए है किसी के लिए नहीं وَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

इसी के लिए अल्लाह तआ़ला अपनी हिकमते कामिल के मुताबिक़ लोगों के दिलों में डालेगा कि पहले और अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالتَّسْلِيْم के पास जाएं और वहाँ से महरूम फिर कर उनकी ख़िदमत में हाज़िर आयें ताकि सब जान लें कि मनसबे शफ़ाअत इसी सरकार का ख़ास्सा है यानी हुज़ूर ﷺ के लिए ख़ास है दूसरे की मजाल नहीं कि उसका दरवाज़ा खोले

وَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

ये हदीसें सही बुख़ारी मुस्लिम तमाम किताबों में मज़कूर और अहले इस्लाम में मारुफ़ व मशहूर हैं ज़िक्र की हाज़त नहीं कि बहुत तवील हैं शक लाने वाला अगर दो हर्फ़ भी बढ़ा हो तो मिश्कात शरीफ़ का उर्दू

में तर्जमा मंगा कर देख ले या किसी मुसलमान से कहे कि पढ़ कर सुना दे।

और इन्हीं हदीसों के आख़िर में यह भी इरशाद हुआ है कि शफ़ाअत करने के बाद हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्नेबीन "ﷺ" गुनहगारों की बख़्शिश के लिए बार-बार शफ़ाअत फरमायेंगे और हर दफ़ा अल्लाह तआ़ला वही कलिमात फरमाएगा और हुज़ूर हर मर्तबा बेशुमार बन्दगाने ख़ुदा को नजात बख़्शेंगे मैं इन मशहूर हदीसों के सिवा एक अरबईन यानी चालीस हदीसें और लिखता हूँ जो अवाम के कानों तक नहीं पहुँची हो जिनसे मुसलमान का ईमान तरक़्क़ी पाए मुन्किर का दिल आतिशे ग़ैज (यानी ग़ुस्से की आग) में जल जाए बिलख़ुसूस जिनसे उन नापाक तहरीफ़ का रद्द हो जो बाज़ बद्दीनों, ख़ुदानातरसों (ख़ुदा से न डरने वाले), नाहक़कशों (बेकार की कोशिश करने वाले), बातिलकशों (बेहूदा लोग) ने शफ़ाअत के माअनों में की और में कीं और इन्कारे शफ़ाअत के चेहरए नजिस छुपाने को एक झूटी सूरत नाम की शफ़ाअत दिल से गढ़ी।

नोट :- यहाँ उन लोगों की तरफ़ इशारा है जिन्होंने शफ़ाअत का ग़लत माअनी निकाल रखे हैं बल्कि कुछ लोग ऐसे भी देखे गए जो सिरे से शफ़ाअत का इन्कार करते हैं।

इन हदीसों से वाज़ेह होगा कि हमारे आक़ाए आज़म "ﷺ" शफ़ाअत के लिए मुताअय्यन (मुक़र्रर) हैं उन्हीं की सरकार बेकसपनाह

है यानी बेसहारों को पनाह देने वाली है उन्हीं के दर से बेयारों का निबाह है न जिस तरह एक बदमज़हब कहता है कि "जिसको चाहेगा अपने हुक्म से शफ़ीअ बना देगा"।

ये हदीसें ज़ाहिर करेंगी कि हमें ख़ुदा व रसूल ने कान खोल कर शफ़ीअ का नाम बता दिया और साफ़ फ़रमाया कि वह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह हैं "ﷺ" न यह बात गोल रखी हो जैसे एक बदबख़्त कहता है कि " उसी के इख़्तेयार पर छोड़ दीजिए जिसको वह चाहे हमारा शफ़ीअ कर दे।

ये हदीसें मुज़दए जाफ़िज़ा (जान को बढ़ाने वाली ख़ुशख़बरी) देंगी कि हुज़ूर की शफ़ाअत न उसके लिए है जिससे इत्तेफ़ाक़न (इत्तेफ़ाक़ से) गुनाह हो गया हो और वह उस पर हर वक़्त नादिम व पशेमान (शर्मिंदा) व तरसाँ व लरज़ाँ है यानी डर रहा है परेशान है जिस तरह एक दुज्दे बातिन (यानी ग़ुस्से की आग में) कहता है कि "चोर पर तो चोरी साबित हो गयी मगर वह हमेशा का चोर नहीं और चोरी को उसने कुछ अपना पेशा नहीं ठहराया मगर नफ़्स की शामत से क़ुसूर हो गया सो उस पर शर्मिंदा है और रात दिन डरता है" नहीं उनके रब की क़सम जिसने उन्हें शफ़ीउल मुज़निबीन किया उनकी शफ़ाअत हम जैसे रूसियाहों, पुरगुनाहों(गुनाहों से भरे हुए), सियाहकारों (काले करतूत वाले), सितमगारों (ज़ुल्म ओ सितम ढाने वाले) के लिए है जिनका बाल बाल ग़ुनाह में बंधा है जिनके नाम से ग़ुनाह भी नंग व आर (शर्म) रखता हो।

(تَرْ سَم آلودہ شَوَد دامنِ عصیاں اَذ مَن)

وَحَسْبُنَا اللّٰهُ تَعَالٰى وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَى الشَّفِيْعِ الْجَمِيْل وَعَلٰى آلِه وَصَحْبِه بِأُلُوفِ التَّبْجِيْلِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن

और अल्लाह हमारे लिए काफ़ी है और क्या ही ख़ूब कारसाज़ है और दुरूद व सलाम नाज़िल हो जमाल वाले शफ़ीअ पर और उनके आल व असहाब पर हजारों ताअज़ीम व तकरीम के साथ तमाम तारीफ़ें अल्लाह के लिए है जो सब जहानों का परवरदिगार है।

हदीस न. 1और 2 :- इमाम अहमद बसनदे सही मुसनद में हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने उमर رضی اللہ تعالٰی عنہما से और इब्ने माजा हज़रते अबू मूसा अशअरी से रावी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्नेबीन(गुनाहगारों की शफ़ाअत करने वाले) "ﷺ" फ़रमाते हैं:-

خُيِّرْتُ بَيْنَ الشَّفَاعَتِهِ وَبَيْنَ أَنْ يَّدْخُلَ نِصْفُ أُمَّتِيْ الْجَنَّتَهَ فَاخْتَرْتُ الشَّفَاعَتَهَ لِأَنَّهَا أَعَمُّ وَأَكْفٰى أَتَرَوْنَهَا لِلْمُتَّقِيْنَ ؟! لَا وَلٰكِنَّهَا لِلْمُذْنِبِيْنَ الْخَطَّائِيْنَ الْمُتَلَوِّثِيْنَ

अल्लाह तआला ने मुझे इख्तियार दिया कि या तो शफ़ाअत लो या यह कि तुम्हारी आधी उम्मत जन्नत में जाए। मैंने शफ़ाअत ली कि वह ज़्यादा तमाम और ज़्यादा काम आने वाली है क्या तुम यह समझ लिए हो कि मेरी शफ़ाअत पाकीज़ा मुसलमानों के लिए है, नहीं बल्कि वह उन गुनाहगारों के वास्ते है जो गुनाहों में आलूदा और सख़्तकार हैं।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَيْهِ — وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن

हदीस न. 3 :- इब्ने अदी हज़रत उम्मुल मोमिनीन उम्मे सलमा رضی اللہ تعالیٰ عنہا से रावी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्नेबीन "ﷺ" फ़रमाते हैं:-

شَفَاعَتِيْ لِلْهَالِكِيْنَ مِنْ أُمَّتِيْ

मेरी शफ़ाअत मेरे उन उम्मतियों के लिए है जिन्हें गुनाहों ने हलाक कर डाला।

हक़ है ऐ शफ़ीअ मेरे मैं क़ुर्बान तेरे

हदीस न. 4—8 :- अबु दाऊद व तिर्मिज़ी व इब्ने हिब्बान व हाकिम व बैहक़ी बइफ़ादए तसहीह हज़रते अनस इब्ने मालिक और तिर्मिज़ी व इब्ने माजा व इब्ने हिब्बान व हाकिम हज़रते जाबिर इब्ने अब्बास और ख़तीब बग़दादी हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने फ़ारूक़ व हज़रते काब इब्ने अजरह رضی اللہ تعالیٰ عنہم से रावी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्नेबीन "ﷺ" फ़रमाते हैं:-

شَفَاعَتِيْ لِلْهَالِكِيْنَ مِنْ أُمَّتِيْ

मेरी शफ़ाअत मेरी उम्मत में उनके लिए जो कबीरा गुनाह वाले हैं।

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْكَ وَسَلَّمَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن

हदीस न. 9 :- अबुबक्र अहमद इब्ने अली बग़दादी हज़रते अबु दाऊद رضی اللہ تعالیٰ عنہ से रावी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्नेबीन "ﷺ" फ़रमाते हैं:-

شَفَاعَتِيْ لِأَهْلِ الذُّنُوْبِ مِنْ أُمَّتِيْ

मेरी शफ़ाअत मेरे गुनाहगार उम्मतियों के लिए है।

अबु दरदा رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने अर्ज़ की: (وَإِنْ زَنٰى وَإِنْ سَرَقَ) अगरचे ज़ानी हो अगरचे चोर हो फ़रमाया:

(وَإِنْ زَنٰى وَإِنْ سَرَقَ عَلٰى رَغْمِ أَنْفِ أَبِي الدَّرْدَاء)

अगरचे ज़ानी हो अगरचे चोर हो बरख़िलाफ़ ख़्वाहिशें अबु दरदा के।(यानी जैसा कि अबु दरदा सोच रहे हैं वैसा नहीं बल्कि चोरों और ज़िनाकारों तक के लिए हुज़ूर की शफ़ाअत है)

हदीस न. 10 , 11 :- तबरानी व बैहक़ी हज़रते बुरेदा और तबरानी मौजम औसत में हज़रते अनस رضی اللہ تعالیٰ عنہ से रावी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्नेबीन "ﷺ" फ़रमाते हैं:-

أَنْ أَشْفَعَ يَوْمَ الْقِيَامَتِه لِأَكْثَرَ مِمَّا عَلٰى وَجْهِ الْأَرْضِ مِنْ شَجَرٍ وَحَجَرٍ وَمَدَرٍ

रु-ए-ज़मीन पर जितने पेड़ पत्थर ढेले हैं मैं क़यामत में उन सबसे ज़्यादा उम्मतियों की शफ़ाअत फ़रमाउंगा।

हदीस न. 12 :- बुख़ारी मुस्लिम हाकिम बैहकी हज़रते अबु हुरैरा رضی الله تعالیٰ عنه से रावी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्नेबीन "ﷺ" फ़रमाते हैं:-

شَفَاعَتِيْ لِمَنْ شَهِدَ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ مُخْلِصًا يُصَدِّقُ قَلْبُهُ لِسَانَهُ

मेरी शफ़ाअत हर कलिमागो के लिए है जो सच्चे दिल से कलिमा पढ़े कि ज़बान की तस्दीक़ दिल करता है।

हदीस न. 13 :- अहमद तबरानी व बज़्जार हज़रते मुआज़ इब्ने जबल व हज़रते अबू मूसा अशअरी رضی الله تعالیٰ عنه से रावी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्नेबीन "ﷺ" फ़रमाते हैं:-

أَنَّهَا أَوْسَعُ لَهُمْ وَهِيَ لِمَنْ مَاتَ وَلَا يُشْرِكُ بِاللهِ شَيْئًا

शफ़ाअत में उम्मत के लिए ज़्यादा वुसअत(गुंजाइश) है कि वह हर शख़्स के वास्ते है जिसका ख़ात्मा ईमान पर हो।

हदीस न. 14 :- तबरानी मोजम औसत में हज़रते अबू हुरैरा رضی الله تعالیٰ عنه से रावी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़्नेबीन "ﷺ" फ़रमाते हैं:-

آتِيْ جَهَنَّمَ فَأَضْرِبُ بَابَهَا فَيُفْتَحُ لِيْ فَأَدْخُلُهَا فَأَحْمَدُ اللهَ مَحَامِدَ مَا حَمِدَهُ أَحَدٌ قَبْلِيْ مِثْلَهَا وَلَا يَحْمَدُهُ أَحَدٌ بَعْدِيْ ثُمَّ أُخْرِجُ مِنْهَا مَنْ قَالَ : لَا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ ، ملخصًا

मैं जहन्नम का दरवाज़ा खुलवा कर तशरीफ़ ले जाऊंगा वहाँ ख़ुदा की तारीफ़ें करूँगा ऐसी की न मुझसे पहले किसी ने की न मेरे बाद कोई करेगा फ़िर दोज़ख से हर उस शख़्स को निकाल लूँगा जिसने ख़ालिस दिल से لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ कहा

हदीस न. 15 :- हाकिम बाइफ़ादए तसहीह और तबरानी व बैहक़ी हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رضی اللہ تعالٰی عنہما से रावी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़निबीन "ﷺ" फ़रमाते हैं:-

يُوْضَعُ لِلْأَنْبِيَاءِ مَنَابِرُ مِنْ ذَهَبٍ فَيَجْلِسُوْنَ عَلَيْهَا وَيَبْقٰى مِنْبَرِيْ لَا أَجْلِسُ عَلَيْهِ أَوْ لَا أَقْعُدُ عَلَيْهِ قَائِمًا بَيْنَ يَدَيْ رَبِّيْ مَخَافَتَه أَنْ يُبْعَثَ بِيْ إِلَى الْجَنَّتِه وَيَبْقٰى أُمَّتِيْ بَعْدِيْ فَأَقُوْلُ : يَا رَبِّ عَجِّلْ حِسَابَهُمْ فَمَا أَزَالُ أَشْفَعُ حَتّٰى أُعْطٰى صِكَاكًا بِرِجَالٍ قَدْ بُعِثَ بِهِمْ إِلَى النَّارِ حَتّٰى أَنَّ مَالِكًا خَازِنَ النَّارِ يَقُوْلُ : يَا مُحَمَّدُ مَا تَرَكْتَ لِغَضَبِ رَبِّكَ فِيْ أُمَّتِكَ مِنْ نِقْمَتِه

अम्बिया के लिए सोने के मिम्बर बिछाए जायेंगे वह उन पर बैठेंगे और मेरा मिम्बर बाक़ी रहेगा कि मैं उस पर जुलूस न फ़रमाउंगा यानी बैठूंगा नहीं बल्कि अपने रब के हुज़ूर सर ओ क़द यानी अदब से खड़ा रहूँगा इस डर से की कंही ऐसा न हो की मुझे जन्नत में भेज दे और मेरी उम्मत मेरे बाद रह जाए फिर अर्ज़ करूँगा ऐ रब मेरे मेरी उम्मत मेरी उम्मत अल्लाह तआला फ़रमाएगा ऐ मुहम्मद तेरी क्या मर्ज़ी है मैं तेरी उम्मत

के साथ क्या करूँ? अर्ज़ करूँगा ऐ रब मेरे उनका हिसाब जल्द फ़रमा दे, बस मैं शफ़ाअत करता रहूंगा यहाँ तक कि मुझे उनकी रिहाई की चिट्ठियां मिलेंगी जिन्हें दोज़ख़ भेज चुके थे यहाँ तक कि मालिक दारोगा ए दोज़ख़ अर्ज़ करेगा ऐ मुहम्मद आपने अपनी उम्मत में रब का गज़ब नाम को न छोड़ा।

اللّٰھُمَّ صَلِّ وَبَارِكْ عَلَيْهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ

हदीस न.16 - 21 :- बुख़ारी व मुस्लिम व निसाई हज़रते जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह और अहमद बसनदे और बुख़ारी तारीख़ में हसन व बज़्जार बसनद जय्यद व दारमी व इब्ने शैबा व अबु याला व नुऐम व बैहक़ी हजरते अबु ज़र और तबरानी मोजमे औसत में बसनदे हज़रते अबु सईद ख़ुदरी और कबीर में हज़रते साएब इब्ने यज़ीद और अहमद बइस्नादे हसन और इब्ने शैबा व तबरनी हज़रते अबु मुसा अशअरी رضی اللہ تعالٰی عنهم से रावी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़निबीन "ﷺ" फ़रमाते हैं :-

قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : (وَأُعْطِيْتُ مَا لَمْ يُعْطَ أَحَدٌ قَبْلِيْ)
إِلٰى قَوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : وَأُعْطِيْتُ الشَّفَاعَةَ

तर्जमा:- इन छ: हदीसों में यह बयान हुआ हैं कि हुज़ूर शफ़ीउल मुज़निबीन "ﷺ" फ़रमाते हैं मैं शफ़ीअ मुक़र्रर कर दिए गया और

शफ़ाअत ख़ास (शफ़ाअते कुबरा) मुझी को अता होगी मेरे सिवा किसी नबी को यह मनसब न मिला।

हदीस न. 22 , 23 :- इब्ने अब्बास व अबु सईद व अबु मूसा से इन्हीं हदीसों में वह मज़मुन भी है जो अहमद व बुख़ारी व मुस्लिम ने अनस और शेख़ैन ने अबु हुरैरा رضی اللہ تعالیٰ عنہ से रिवायत किया रदियल्लाहु तआला अलैहिम अजमईन कि हुज़ूर शफ़ीउल मुज़निबीन "ﷺ" फ़रमाते हैं :-

(إِنَّ لِكُلِّ نَبِيٍّ دَعْوَةً قَدْ دَعَا بِهَا فِيْ أُمَّتِه وَاسْتُجِيْبَ لَهٗ) وَلَفْظُ ابْنِ عَبَّاسٍ : (لَمْ يَبْفَ نَبِيٌّ إِلَّا أُعْطِيَ سُؤْلَهٗ) رَجَعْنَا إِلَى لَفْظِ أَنَسٍ وَأَلْفَاظُ الْبَاقِيْنَ كَمِثْلِه مَعْنًى ، قَالَ (وَإِنِّي اخْتَبَأْتُ دَعْوَتِيْ شَفَاعَةً لِأُمَّتِيْ يَوْمَ الْقِيَامَتِه) زَادَ أَبُوْ مُوْسٰى : (جَعَلْتُهَا لِمَنْ مَاتَ مِنْ أُمَّتِيْ لَا يُشْرِكُ بِاللهِ شَيْئاً) وَهٰذَا اللَّفْظُ لِأَنَسٍ وَلَفْظُ أَبِيْ سَعِيْدٍ : (لَيْسَ مِنْ نَبِيٍّ إِلَّا وَقَدْ أُعْطِيَ دَعْوَةً فَتَعَجَّلَهَا

तर्जमा : अम्बिया عَلَيْهِ ٱلصَّلٰوةُ وَٱلسَّلٰمُ की अगरचे हज़ारों दुआएं क़बूल होती हैं मगर एक दुआ उन्हें ख़ास जनाबे बारी तआला से मिलती है कि जो चाहो मांग लो बेशक दिया जाएगा तमाम अम्बिया आदम से ईसा तक (عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَٱلسَّلٰمُ) सब अपनी अपनी वह दुआ दुनिया में कर चुके और मैंने आख़िरत के लिए उठा रखी वह मेरी शफ़ाअत है

मेरी उम्मत के लिए , क़्यामत के दिन मैंने उसे अपनी सारी उम्मत के लिए रखा है जो ईमान पर दुनिया से उठा।

ऐ ख़ुदा हमें उनके मक़मों मनसब के तुफ़ैल उनकी शफ़ाअत अता फ़रमा अल्लाहु अकबर ! ऐ गुनाहगाराने उम्मत ! क्या तुमने अपने मालिक व मौला "ﷺ" की यह कमाले राफ़त व रहमत अपने हाल पर न देखी ? कि बारगाहे इलाही अज़्ज़ जलालुहू से तीन सवाल हुज़ूर "ﷺ" को मिले कि जो चाहो मांग लो अता होगा ।

हुज़ूर "ﷺ" ने उनमें कोई सवाल अपनी ज़ाते पाक के लिए न रखा, सब तुम्हारे ही काम में सर्फ़ फ़रमा दिए। दो सवाल दुनिया में किए वह भी तुम्हारे ही वास्ते तीसरा आख़रत को उठा रखा वह तुम्हारी उस अज़ीम हाजत के वास्ते जब उस मेहरबान मौला रऊफ़ुर्रहीम आक़ा "ﷺ" के सिवा कोई काम आने बाला बिगड़ी बनाने वाला न होगा।

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

हक़ फ़रमाया हज़रते हक़ عَزَّوَجَلَّ ने

عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ

तर्जमा : जिन पर तुम्हारा मशक्क़त में पड़ना गिरा है तुम्हारी भलाई के निहायत चाहने वाले मुसलमानों पर कमाल मेहरबान मेहरबान।

वल्लाहिल अज़ीम क़सम उसकी जिसने उन्हें हम पर मेहरबान किया कि हरगिज़ हरगिज़ कोई माँ अपने अज़ीज़ प्यारे इकलौते बेटे पर इतनी मेहरबान नहीं जिस क़द्र वह अपने एक उम्मती पर मेहरबान हैं ।

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

इलाही ! तू हमारा इज्ज़ (आजज़ी) व जुअफ़ (कमज़ोर होना) और उनके हुकूक़े अज़ीमया की अज़मत जानता है ऐ क़ादिर ! ऐ वाजिद ! ऐ माजिद ! हमारी तरफ़ से उन पर और उनकी आल पर वह बरकत वाली दुरूदें नाज़िल फ़रमा जो उनके हुक़ूक़ को वाफ़ी हों और उनकी रहमतों को मुकाफ़ी ।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ قَدْرَ رَأْفَتِهٖ وَرَحْمَتِهٖ بِأُمَّتِهٖ وَقَدْرَ رَأْفَتِكَ وَرَحْمَتِكَ بِهٖ آمِيْن آمِيْن اِلٰهَ الْحَقّ ، آمِيْن

सुब्हानअल्लाह ! उम्मतियों ने उनकी रहमतों का यह मुआवज़ा रखा कि कोई अफ़ज़लियत में तशकीकें निकालता है (यानी उनके सबसे अफ़ज़ल होने में शक करता है), कोई उनकी शफ़ाअत में शुबा डालता है , कोई उनकी तारीफ़ अपनी सी जानता है , कोई उनकी ताज़ीम पर बिगड़ कर कर्राता है अफ़आले महब्बत का बिदअत इजलालो अदब पर शिर्क के अहकाम । (यानी आलाहज़रत फ़रमा रहे हैं कि हमारे आक़ा तो हम पर इतने मेहरबान कि हर वक़्त हमें याद रखें और कुछ

लोग हैं कि उनके मरतबे में शक करते हैं बल्कि बाज़ तो अपने जैसा बशर जानते हैं)

وَ سَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَیَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ وَلَا حَوْلَ وَلَا اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّـآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ

قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم

हदीस न. 24 : - सहीह मुस्लिम में हजरते उबई इब्ने कअब رضی اللہ تعالیٰ عنہ से मरवी हुजूर शफीउल मुज़निबीन "ﷺ" फ़रमाते हैं:-

अल्लाह तआला ने मुझे तीन सवाल अता फ़रमाए मैने दो बार तो दुनिया में अर्ज़ कर ली اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِأُمَّتِي اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِأُمَّتِي इलाही मेरी उम्मत की मग़फिरत फ़रमा इलाही मेरी उम्मत की मग़फ़िरत फ़रमा وَأَخَّرْتُ الثَّالِثَةَ لِيَوْمٍ يَرْغَبُ إِلَيَّ فِيْهِ الْخَلْقُ حَتّٰى إِبْرَاهِيْم और तीसरी अर्ज़ उस दिन के लिए उठा रखी जिस मे तमाम मखलूके इलाही मेरी तरफ़ नियाज़मन्द होगी यहाँ तक कि इब्राहिम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ

وَصَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلَيْهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن

हदीस न. 25 : बैहकी हज़रते अबू हुरैरा رضی اللہ تعالیٰ عنہ से रावी हुज़ूर शफ़ीउल मुज़निबीन "ﷺ" ने शबे असरा अपने रब से अर्ज़ की तूने अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ को ये - ये फ़ज़ाइल बख़्शे । रब तबारक व तआला ने फ़रमाया :

أَعْطَيْتُكَ خَيْرًا مِنْ ذٰلِكَ اِلٰى قَوْلِه : خَبَأْتُ شَفَاعَتَكَ وَلَمْ أَخْبَأْهَا النَّبِيَّ غَيْرَكَ

तर्जमा : मैंने तुझे अता फ़रमाया वह उन सबसे बेहतर है मैंने तेरे लिए शफ़ाअत छुपा कर रखी और तेरे सिवा दूसरे को न दी।

हदीस न. 26 : - इब्ने अबी शैबा व तिर्मिज़ी बइफ़ादए तहसीन व तसहीह और इब्ने माजा व हाकिम बहुक्मे तसहीह हज़रते उबई इब्ने कअब رضی الله تعالیٰ عنه से रावी हुजूर शफ़ीउल मुज़निबीन "ﷺ" फ़रमाते हैं :

إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَتِه كُنْتُ إِمَامَ النَّبِيِّيْنَ وَخَطِيْبَهُمْ وَصَاحِبَ شَفَاعَتِهِمْ غَيْرَ فَخْرٍ

तर्जमा : क़्यामत के दिन मैं अम्बिया का पेशवा और उनका ख़तीब और उनका शफाअत वाला होंगा और यह कुछ फ़ख़्र की राह से नहीं फ़रमाया।

हदीस न. 27 - 40 : - इब्ने मनीअ हज़रते ज़ैद इब्ने अरक़म वगैरह चौदह सहाबाए किराम رضی الله تعالیٰ عنهم से रावी हज़रते शफ़ीउल मुज़निबीन "ﷺ" फ़रमाते हैं :

شَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَتِه حَقٌّ فَمَنْ لَمْ يُؤْمِنْ بِهَا لَمْ يَكُنْ مِنْ أَهْلِهَا

तर्जमा : मेरी शफ़ाअत रोज़े क़्यामत हक़ है जो इस पर ईमान न लाएगा इस के क़ाबिल न होगा।

मुन्किरे मिस्कीन हदीसे मुतावातिर को देखे और अपनी जान पर रहम करके शफ़ाअते मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ पर ईमान लाए

اَللّٰهُمَّ إِنَّكَ تَعْلَمُ هَدَيْتَ فَاٰمَنَّا بِشَفَاعَةِ حَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَاجْعَلْنَا مِنْ أَهْلِهَا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ يَا أَهْلَ التَّقْوٰى وَأَهْلَ الْمَغْفِرَةِ وَاجْعَلْ أَشْرَفَ صَلَوَاتِكَ وَأَنْمٰى بَرَكَاتِكَ وَأَزْكٰى تَحِيَّاتِكَ عَلٰى هٰذَا الْحَبِيْبِ الْمُجْتَبٰى وَالشَّفِيْعِ الْمُرْتَجٰى وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ دَائِمًا أَبَدًا ، آمِيْن يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْن

जिसके माथे शफ़ाअत का सेहरा रहा।

उस जबीने सआदत पे लाखों सलाम।।